दयाल ग्रुप का त्रैमासिक मुख-पत्र

कृषि बुलेटिन

दयाल GROUP ... SINCE 1979

अंक : 21/2016/02 माह : अगस्त से अक्टूबर 2016 For Private Circulation only

आलू की व्यवसायिक खेती

aalooz अन्तराष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता "बीज आलू" द्वारा

दयाल aalooz आधुनिकतम वैज्ञानिक "टिश्यू कल्चर" विधि द्वारा प्राप्त उन्नत बीज आलू है, जिसको अति आधुनिक टिश्यू-कल्चर व बायोटेक प्रयोगशाला में प्रगुणित पौधों से प्राप्त मिनी ट्यूबर के माध्यम से उत्पादित किया जाता है। "**बीज आलू**" पूरी तरह से कुशल व देश के प्रतिष्ठित सरकारी शोध संस्थानों से सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों की देख-रेख में तैयार किया जाता है।

दयाल aalooz बीज आलू की मुख्य किस्में

सामान्य प्रचलित किस्में: कुफरी बहार (3797), कुफरी पुखराज, कुफरी सूर्या, कुफरी गौरव, कुफरी लवकार, कुफरी ज्योति, कुफरी रेड।

प्रोसेसिंग किस्में: कुफरी चिप्सोना- 1, 3 व 4, कुफरी फ्रायसोना एवं रेड रोज।

भूमि उपचार: अंतिम जुताई के समय अनमोल खाद 160-240 किग्रा0 + वसुधा बायोबूस्टर 2 किग्रा0 + वसुधा बायोफास 2 किग्रा0 + अनमोल डर्मा 2 किग्रा0 प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

बीज उपचार : प्रथम उपचार- भू-जनित तथा बीज जनित रोगों से बचाव हेतु बीज कंदों का प्रथम उपचार बोरोफर्ट 1 ग्राम को प्रति लीटर पानी की दर से आलू के बीजों पर स्प्रे करें।

द्वितीय उपचार- 250 मिली0 सीड़ क्योर को 50 लीटर पानी में घोलकर 1 टन आलू बीज की धुलाई करने से कंद गलन, काला कंद (ब्लैक स्कर्फ), अगेती व पछेती झुलसा आदि बीमारियों में प्रभावी नियंत्रण पाया जाता है।

काला कंद

उर्वरक प्रबंधन :

बुवाई के समय: DAP 75-100 किग्रा0 + सुपर एक्शन पोटाश 16-20 किग्रा0 + कैल्शिबोर 3 किग्रा0 + हर्बो केयर -G 10 किग्रा0 + आलू शक्ति 5-10 किग्रा0 प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

प्रथम टॉप ड्रेसिंग: बुवाई के 20-25 दिन बाद यूरिया 30 किग्रा0 + नैनो सल्फ 3 किग्रा0 + ह्यूमिक फर्ट 500 ग्राम को प्रति एकड़ की दर से बुरकाव करें।

प्रथम पर्णीय छिडकाव: बुवाई के 30 दिन बाद सुपर एक्शन अमृत द्रव 2 मिली0 + अनमोल 19:19:19 - 10 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर स्प्रे करें।

द्वितीय टॉप ड्रेसिंग: बुवाई के 35-40 दिन बाद यूरिया 30 किग्रा0 + अनमोल माईक्रो सुपर एक्शन 500 ग्राम + सुपर एक्शन अमृत G - 5 किग्रा0 को प्रति एकड़ की दर से बुरकाव करें।

द्वितीय पर्णीय छिड़काव: बुवाई के 40-45 दिन पर बोरोफर्ट 2 ग्राम + ह्यूमिक रस 3 मिली0 + अनमोल 0:52:34 - 10 ग्राम को प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर स्प्रे करें।

फसल सुरक्षा -

कीट नियंत्रण: आलू की फसल में कीटों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता के विकास के लिए हर्बो सेफ 1.5-2 मिली0 + अनमोल सारथी 0.2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर शाम के समय छिड़काव करें। आवश्यकता हो तो 20-25 दिनों के अन्तराल पर पुन: स्प्रे करें।

रोग नियंत्रण: सूडो केयर 250 मिली0 या अनमोल सूडो 2 किग्रा0 को 250 ग्राम गुड के साथ 250 लीटर पानी में घोलकर शाम के समय छिड़काव करें। आवश्यकता हो तो 20-25 दिनों के अन्तराल पर पुन: स्प्रे करें।

अगस्त से अक्टूबर माह की कृषि क्रियाएँ

धान

अगस्त - सितम्बर माह में कल्ले तथा बाली निकलने का समय होता है इस समय यूरिया 20 किग्रा0 + मोनो ज़िंक 5 किग्रा0 + अक्षत G -5 किग्रा प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

पर्णीय छिड़काव : अनमोल वीटा 3 मिली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर स्प्रे करें। किसी भी प्रकार की सूंडी (पत्ती लपेटक, तना बेधक) व अन्य कीटों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता के विकास के लिए हर्बो सेफ 1.5-2 मिली0 + अनमोल सारथी 0.2 मिली0 + वेजमोर 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर स्प्रे करें ।

सरसों / तोरिया

सितम्बर - अक्टूबर माह में सरसों की बुवाई कर देनी चाहिए। बुवाई के लिए बीज की मात्रा 1.5 से 2 किग्रा0 प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें तथा बुवाई के समय DAP - 35 किग्रा0 या SSP 100 किग्रा0 + अनमोल खाद 160 किग्रा0 + सुपर एक्शन पोटाश 8 किग्रा0 + नैनो सल्फ़ 3 किग्रा0 प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें ।

अरहर

अरहर में निराई गुडाई करें यदि पौधे घने हों तो विरलीकरण (छटाई) करें और पौधे से पौधे की दूरी 20-25 सेमी0 रखें तथा नाइट्रोकैल 10 किग्रा0 + ह्यूमिक फर्ट 1 किग्रा0 + वेजमोर 500 ग्राम को प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें ।

मक्का

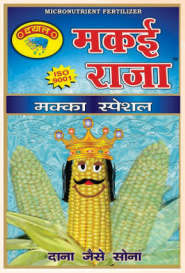

मक्का में बुवाई के 45-50 दिन बाद (सिल्किंग स्टेज) में दूसरी टॉप ड्रेसिंग के लिए यूरिया 25 किग्रा0 + नाइट्रोकैल 5 किग्रा0 + ह्यूमिक फर्ट 500 ग्राम + सुपर एक्शन अनमोल माईक्रो 500 ग्राम को मिलाकर प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। यदि पहली यूरिया के साथ मकई राजा का प्रयोग नहीं हुआ है तो 5 किग्रा0 मकई राजा का प्रयोग प्रति एकड़ की दर से करें।

चना, मटर

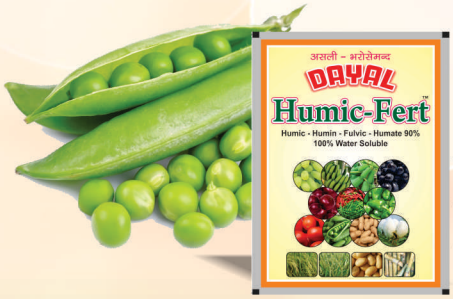

अक्टूबर माह में खेत की तैयारी के लिए बुवाई के पूर्व अंतिम जुताई के समय 160-200 किग्रा0 अनमोल खाद नीम प्लस + 2 किग्रा0 अनमोल डर्मा को प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

बीज उपचार - 10 0 मिली0 सीड क्योर से एक एकड़ में लगने वाले बीज का शोधन करें।

बुवाई के समय उर्वरक प्रबंधन 40 किग्रा0 DAP + 8 - 12 किग्रा0 सुपर एक्शन पोटाश + 10 किग्रा0 हर्बो केयर G + 5 किग्रा0 महा शक्तिशाली को प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

मूँगफली

मूंगफली की फसल में इस समय सफेद गिडार, दीमक, बालदार सूंडी, तम्बाकू की सूंडी आदि कीटों के कारण उपज में कमी आती है। स्वस्थ व अधिक पैदावार के लिए हर्बल पावर 4-6 किग्रा0 + महा शक्तिशाली 5 किग्रा0 + धरती गोल्ड 5 किग्रा0 को प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें तथा 20-25 दिन के अन्तराल पर हर्बोसेफ 2 मिली0 + वेजमोर 1 ग्राम + अनमोल सारथी 0.2 मिली0 को प्रति लीटर पानी की दर से स्प्रे करें।

केले का व्यवसायिक उत्पादन

केला सभी प्रकार की भूमि में लगाया जा सकता है, बशर्ते भूमि में पानी रोकने की क्षमता के साथ-साथ जल निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। केले का पौधा उन स्थानों पर सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है जहाँ तापमान 15-40 डिग्री0 सें0 ग्रे0 होता है।

पौधे लगाने का समय- जिन क्षेत्रों में सामान्य वर्षा होती है वहाँ केला को जुलाई-अगस्त में रोपित किया जाना चाहिए, अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में सितम्बर-अक्टूबर में रोपाई करें।

खाद एवं उर्वरक - तालिका के अनुसार समय-समय पर उर्वरक प्रबन्धन करें।

क्र. सं.	उर्वरक	मात्रा प्रति एकड़	प्रयोग विधि
(क)	बेसल (भूमि की अन्तिम जुताई के समय)		
1.	अनमोल खाद नीम प्लस	200-240 कि0 ग्रा0	इन सभी को मिलाकर कम से कम 8 घन्टे रखने के बाद प्रयोग करें।
2.	धरती गोल्ड	5 कि0 ग्रा0	
3.	सुपर एक्शन पोटाश	20 कि0 ग्रा0	
4.	अनमोल डर्मा	2 कि0 ग्रा0	
5.	अनमोल माइक्रो (आम केला फल स्पेशल)	10 कि0 ग्रा0	
6.	डी0 ए0 पी0	35 कि0 ग्रा0	
7.	कैल्शिबोर	6 कि0 ग्रा0	
(ख)	रोपाई के 25-30 दिन बाद		
9.	यूरिया	35 कि0 ग्रा0	
10.	नैनो सल्फ़	3 कि0 ग्रा0	
11.	मैग्नीशियम सल्फेट	25 कि0 ग्रा0	
12.	ह्यूमिक फर्ट	1 कि0 ग्रा0	
(ग)	रोपाई के 75-80 दिन बाद		
13.	नाईट्रोकैल - B	10 कि0 ग्रा0	
14.	डी0 ए0 पी0	35 कि0 ग्रा0	
15.	सुपर एक्शन अमृत - G	10 कि0 ग्रा0	
16.	दयाल मोनो जिंक	5 कि0 ग्रा0	
17.	बोरोफर्ट	2 कि0 ग्रा0	
18.	फैरस सल्फेट	10 कि0 ग्रा0	
(घ)	रोपाई के 110-115 दिन बाद		
19.	यूरिया	35 कि0 ग्रा0	
20.	हर्बो केयर - G	10 कि0 ग्रा0	
21.	अनमोल माइक्रो (आम केला फल स्पेशल)	10 कि0 ग्रा0	

क्र. सं.	उर्वरक	मात्रा प्रति एकड़	प्रयोग विधि
(ड़)	रोपाई के 210-215 दिन बाद		
22.	यूरिया	35 कि0 ग्रा0	
23.	सुपर एक्शन पोटाश	20 कि0 ग्रा0	
24.	अनमोल माइक्रो (आम केला फल स्पेशल)	10 कि0 ग्रा0	
(च)	पर्णीय छिड़काव (स्प्रे) 140-200 दिन तक प्रत्येक 15-20 दिनों बाद		
25.	नाईट्रोकैल	1 कि0 ग्रा0	
26.	सुपर एक्शन अमृत द्रव	500 मिली0	150-200 ली0 पानी के साथ
27.	वेजमोर माइक्रोफ़ूड	500 ग्राम	
28.	अनमोल सारथी	50 मिली0	
(छ)	पर्णीय छिड़काव (स्प्रे) 215 दिन बाद		
29.	सुपर एक्शन पोटाश द्रव	500 मिली0	150-200 ली0 पानी के साथ
30.	अनमोल एन0 पी0 के0 (00:00:50)	1-2 कि0 ग्रा0	
31.	अनमोल सारथी	50 मिली0	

सस्य क्रियाएँ एवं सिंचाई- केले के पौधों में समय-समय पर निराई-गुडाई की जानी चाहिए। केले की फसल में अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है अत: पौधा लगाने के तुरन्त बाद सिंचाई कर देनी चाहिए तत्पश्चात 4 दिन बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए। आवश्यकता अनुसार गर्मी के मौसम में 8-10 दिनों के अन्तराल पर तथा जाडों के दिनों में 15-20 दिन के अन्तराल पर सिचाई करनी चाहिए।

BIOTER

दीमक की समस्या का सम्पूर्ण समाधान

दयाल बायोटर रिसर्च पर आधारित प्राकृतिक तत्वों से निर्मित दीमकनाशी उत्पाद है। जो विभिन्न प्रकार के पौधों का सत्व व सूक्ष्म जीवों का मिश्रण (consortia) है। **दयाल बायोटर** के प्रयोग से दीमक में संक्रामक बीमारी उत्पन्न हो जाती है जो बाँम्बी में रहने वाली अन्य दीमकों तथा रानी दीमक को भी संक्रमित कर नष्ट कर देती है। जिससे दीमक पर पूर्ण रूप से लम्बे समय तक नियन्त्रण प्राप्त होता है।

विशेषताएँ -

▪ दीमक व अन्य भू-जनित कीटों का प्रभावी नियंत्रण

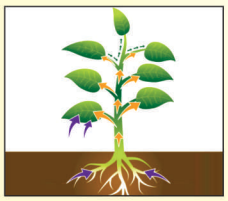

▪ पौधों में आवश्यक प्रतिरोधक क्षमता का विकास

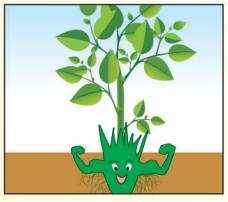

▪ गुणवत्ता युक्त भरपूर फसल उपज सम्भव

प्रयोग - बुवाई पूर्व अन्तिम जुताई के पहले या बुवाई के समय भूमि में 10 किग्रा0 **दयाल बायोटर** प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें ।

अधिक लाभ के लिये 120 किग्रा0 **दयाल अनमोल खाद** के साथ मिलाकर 24-48 घंटे छायादार स्थान पर रखने के उपरान्त प्रयोग करना चाहिए ।

नोट- प्रयोग करते समय खेत में नमी का होना आवश्यक है ।

दयाल उन्नत बीज

सरसों

बुवाई का समय – बीज की बुवाई 15 सितम्बर से नवम्बर के अन्तिम सप्ताह तक की जाती है।

बीज की मात्रा – 1.25 – 1.5 किग्रा0 प्रति एकड़।

बीज की गहराई व दूरी – बीज की बुवाई भूमि में 4 से 5 सेमी0 की गहराई पर, कतार से कतार की दूरी 45–60 सेमी0 एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 से 15 सेमी0 पर करें।

खाद व उर्वरक – अन्तिम जुताई के समय 120 किग्रा0 अनमोल खाद नीम प्लस + 30 किग्रा0 डी.ए.पी. + 8 किग्रा0 सुपर एक्शन पोटाश + 2 किग्रा0 ''दलहन तिलहन स्पेशल'' प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें। प्रथम सिंचाई के उपरान्त 20 किग्रा0 यूरिया में 3 किग्रा0 नेनोसल्फ व 5 किग्रा0 सुपर एक्शन अमृत G मिलाकर खड़ी फसल में बुरकाव करें।

सिंचाई – साधारणत: बुवाई के एक माह के अन्तराल पर सिंचाई करें। फूल आते समय व फलियों में दानें भरने के समय खेत में नमी अवश्य बनाये रखें।

कीट एवं रोग नियन्त्रण – माहू (चेंपा) से फसल को बचाने के लिए फलियों में दाना बनते समय

उन्नत सरसों प्रजातियाँ

इमिडाक्लोरपिड 0.5 से 1 मिली0/लीटर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

पर्ण धब्बे, सफेद रतुआ एवं रोयेदार फफूंदी रोग से फसल के बचाव हेतु मैन्कोजेव 200–250 ग्रा0 या 2 किग्रा0 अनमोल सूडो को 250 ग्रा0 गुड़ के साथ 150–200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

कटाई – जब 80 से 85 प्रतिशत फलियों का रंग हल्का भूरा हो जाए तब फसल की कटाई कर लेनी चाहिए।

माहूँ (चेंपा)

पत्ता गोभी

बुवाई का समय: 20 जुलाई से 15 अक्टूबर तक का समय उचित रहता है।

बीज दर: 100–130 ग्राम / एकड़

उचित दूरी: पंक्ति से पंक्ति : 45–60 सेमी0, पौध से पौध: 30–45 सेमी0

बीज शोधन: फफूँद जनित रोगों से सुरक्षा हेतु 10 मिली0 सीड क्योर से प्रति 100 ग्राम बीज का शोधन करें ।

नर्सरी प्रबन्धन: एक एकड़ में गोभी लगाने के लिए 6 क्यारियाँ 7 मी0 x 1.25 मी0 x 15 सेमी0 ऊँची तैयार करें। प्रत्येक क्यारी में बुवाई से पूर्व 0.3% कैप्टान के घोल का छिड़काव करने पर फफूँद जनित रोगों से बचाव होता है। प्रत्येक क्यारी के लिए 4 किग्रा0 अनमोल खाद + 100 ग्राम यूरिया + 150 ग्राम डी.ए.पी. + 100 ग्राम सुपर एक्शन पोटाश का प्रयोग करें। नर्सरी हमेशा नये स्थान पर लगायें। 25 से 30 दिन पुरानी पौध को रोपाई से पहले सीड क से 4 मिली0 प्रति ली0 पानी के घोल में 5–10 मिनट तक डुबाकर सायं के समय रोपाई करें।

सिंचाई: पौध लगाने के 7 दिन तक लगातार हल्की सिंचाई करें और बाद में 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई आवश्यक है।

खाद एवं उर्वरक: रोपाई से पूर्व अन्तिम जुताई के समय अनमोल खाद नीम प्लस 160–200 किग्रा0 / एकड़ की दर से प्रयोग करें। पौध लगाते समय डी0ए0पी0 50 किग्रा0 + सुपर एक्शन पोटाश 8 किग्रा0 + महा शक्तिशाली 10 किग्रा0 +ह्यूमिक फर्ट 500 ग्राम का प्रयोग प्रति एकड़ की दर से करें ।

संकर पत्ता गोभी प्रजातियाँ

◆ पौध रोपाई के 15–20 दिन बाद यूरिया 20 किग्रा0 + सुपर एक्शन अमृत G 10 किग्रा0 + नैनो सल्फ 3 किग्रा0 + कैल्शिबोर 3 किग्रा0 प्रति एकड़ की दर से खड़ी फसल में प्रयोग करें ।

◆ पौध रोपाई के 35–40 दिन बाद यूरिया 20 किग्रा0 + सुपर एक्शन मोनों ज़िंक 300 ग्राम + अनमोल माइक्रो सुपर एक्शन 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

खरपतवार नियंत्रण: समय–समय पर निराई–गुड़ाई कर खेत को खरपतवार मुक्त रखें एवं पौधों पर मिट्टी चढ़ाएँ।

छिड़काव: रोपाई के 25 दिन बाद ह्यूमिक रस 500 मिली0 + वेजमोर माइक्रो फूड 250 ग्राम + अनमोल सारथी 30 मिली0 को 150 ली0 पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से स्प्रे करें ।

रोग प्रबन्धन : गोभी की फसल में मुख्यत: जड़ गलन, पर्ण धब्बे, उकठा, चूर्णिला आसिता आदि रोगों से बचाव के लिए प्रति एकड़ 2 किलो अनमोल सूडो + 250 ग्राम गुड़ को 150 ली0 पानी में घोलकर रोपाई के 25–30 दिन बाद 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करना लाभदायक होता है। यदि फसल में फफूँद जनित रोग आ गया है तो मेन्कोजेब + काबर्न्डाजिम का प्रयोग 250 ली पानी में मिलाकर करें।

मूली

बुवाई का समय: अलग–अलग स्थानों पर मूली की फसल की बुवाई जुलाई से मार्च माह तक की जाती है।

बीज दर: 1.5–2 किग्रा0 प्रति एकड़ ।

बीज उपचार: फफूँदजनित बीमारियों से बचाव हेतु बीज को सीड क्योर 20 मिली0 / किग्रा0 बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिए।

उचित दूरी: पौध से पौध की दूरी 10–15 सेमी0 पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45–50 सेमी0

खाद एवं उर्वरक: अन्तिम जुताई के समय 3–4 बैग अनमोल खाद नीम प्लस + 35 किग्रा0 डी0ए0पी0 + 12 किग्रा0 सुपर एक्शन पोटाश + 5 किग्रा0 महा शक्तिशाली प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें।

सिंचाई: मूली में हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है, मिट्टी में नमी के आधार पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। गर्मी के मौसम में 4–7 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिए।

टॉप ड्रेसिंग: बुवाई के 30 दिन बाद 10–12 किग्रा0 यूरिया + 3 किग्रा0 मोनो ज़िंक + 2 किग्रा0

संकर मूली प्रजातियाँ

कैल्शिबोर का प्रयोग प्रति एकड़ की दर से करें।

खरपतवार नियंत्रण: अच्छी पैदावार के लिए समय–समय पर निराई गुड़ाई की आवश्यकता होती है। प्रत्येक सिंचाई के बाद पपड़ी तोड़ना चाहिए तथा ऊपर निकली हुई जड़ों पर हल्की मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए इससे पैदावार अच्छी मिलती है।

मूली की फसल पर बीटल, माहू, मकड़ी आदि कीट लग जाते है। इसके लिए 1–1.5 मिली0 एमिडा क्लोरोपिड को प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

पर्ण धब्बे, व्हाइट रस्ट रोग से मूली को बचाने के लिए 1–2 किग्रा0 अनमोल सूडो या 250 मिली0 सूडो केयर को 150–200 ली0 पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें ।

''बरसात का मौसम''

पोल्ट्री मैनेजमेन्ट के लिये एक चैलेन्ज

मई-जून के मुकाबले तापमान तो बरसात में कम होगा परन्तु हवा में नमी-आद्रता (Humidity) की मात्रा काफी बढ जाती है। अत: ध्यान दें - ''यदि तापमान मई-जून के मुकाबले 44 डिग्री सेल्सियस से घटकर 35 डिग्री सेल्सियस आ गया हो परन्तु आद्रता 70 प्रतिशत बारिस के महीनों में हो तो इसका असर 51 डिग्री सेल्सियस का पक्षी पर पड़ेगा।''

गर्मी की ''गर्मी'' सूखी है जबकि बरसात की ''**गर्मी**'' गीली है तभी तो बरसात के मौसम में हमारा आपका-सबका -शरीर ''**चिपचिपा**'' होने लगता है या सलट्री होने लगता है। बरसात के मौसम में जब तक हवा चलती रहती हैं तो मौसम बड़ा सुहावना लगता है हमें, आपको और पक्षी को बडी राहत मिलती है परन्तु जब यही हवा रूक जाती है तो जीना मुश्किल हो जाता है। हम जब विचलित हो जाते है तो पक्षी का क्या हाल होगा ? यह मौसम पूर्णरूप से पोल्ट्री के लिये धोखा-धड़ी का मौसम है।

हम कहाँ गलती कर रहे हैं ?

1. बरसात के मौसम में बारिस हो जाने के बाद जब यह कुछ दिनों के लिये रूक जाती है तो तापमान कम होने के बावजूद भी हवा में आद्रता (नमी) अधिक होने के कारण गर्मी की तीव्रता बहुत अधिक हो जाती है जो निश्चित ही पक्षी के लिये बहुत हानिकारक है। कभी-कभी तो बाहर गर्म हवा बहने लगती है। बहुत से किसान -शेड को ठण्डा रखने के लिय गर्मी में जो पर्दे आदि गीला करने का प्रायोजन करते हैं पहली बारिस होते ही उसे उतार देते हैं और लपेट कर अगले साल के लिये रख देते हैं। यहाँ हम धोखा खा गये। यह लगे रहने चाहियें जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर उनका उपयोग किया जा सके।

2. फीड में जो विटामिन ''**सी**'' गर्मी में जरूर दिया जाता है उसे बारिस होते ही बन्द कर देते हैं। यह भी गलत है। वैसे विटामिन सी हमेशा चलता रहे तो फायदा ही होगा। बारिस के समय इलेक्ट्रोलाईट, जो पानी में दिया जा रहा होता है उसे भी बन्द कर देते हैं। यह भी गलत है जब तक पक्षी ''**पैन्टिग**'' (मुंह खोलकर सांस) करती है तब तक हमें देते रहना चाहिये। बारिस होते ही तापमान इतना नीचे आ जाता है जो नये चूजों की आवश्यकता से कम होता है। ऐसे में भले ही थोड़े समय के लिये ही हमें अतिरिक्त ''**हीट**'' देनी चाहिए अन्यथा चूजों में चिलिंग (ठंड) हो सकती है।

लिटर मैनेजमेन्ट: - बरसात के मौसम में लिटर (बिछावन) मैनेजमेन्ट का बहुत महत्व है। वैसे तो यह सदैव सही रहना चाहिये परन्तु हर मौसम में इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कभी आप शेड़ का बाहर से चक्कर लगा रहे हो तो अन्दर से गर्मी का ''**भपका**'' आपको लगेगा। यह तभी होगा जब बुरादा (बिछावन) गीला हो और उसे मुट्ठी में बन्द करें तो भेली बन जाऐ। इसमें अमोनिया जहाँ बहुत अधिक उत्पन्न होगी वहीं बहुत सी बीमारियों के पनपने की सम्भावना बहुत बढ़ जाती है विशेष रूप से सांस की बीमारियों एवं काक्सीडियोसिस इन्ट्राईटिस (आँतो में सूजन) की भी सम्भावना बहुत अधिक बढ़ जाती है जिसमें पक्षी पतला दस्त (Loose Motion) करते हैं।

हमें लिटर को सूखा बनाये रखने का हर जतन करना चाहिये। रेकिंग (गुड़ाई) जरूर प्रतिदिन करते रहना चाहिये। ध्यान रहे अमोनिया अधिक होने के कारण एवं मौसम की ऊँची-नीची मार के कारण अर्थात स्ट्रेस (stress) के कारण अवरोधक क्षमता (Immunity) टूट सकती है अत: बूस्टर वैक्सीन विशेष रूप से रानी खेत (ND) को पहले ही लगा दें।

बरसात में हम क्या करें ?

1. गर्मी के हिसाब से हमने जो कुछ फीड में बदलाव किया था उसको ही चलने दें।
2. मक्खी इस मौसम की देन है जो बीमारी फैलाने में भी अपना योगदान करती है अत: स्प्रे द्वारा या इसकी विशेष दवा फीड में देने से इस पर पूरा नियंत्रण पाया जा सकता है।
3. हमें शेड़ के चारों ओर ऐसे पौधे या डालियां काट देनी चाहियें जो हवा के प्रवाह में बाधक हों। हमें शेड़ के चारों ओर ऐसी फसल नहीं लेनी चाहिये जो ऊँची हों और हवा को रोकें जैसे मक्का, बाजरा व चरी इत्यादि। हवा का प्रवाह जितना अधिक होगा उतना अधिक लाभ होगा।
4. ब्रायलर फार्मर बरसात के मौसम को ध्यान में रखते हुये 15-20 प्रतिशत तक चूजे कम डालें तो बेहतर रहेगा।
5. पानी के बर्तन को दो तीन बार साफ करें और ध्यान रखें सदैव पानी ठण्डा रहे। बर्तन भी कुछ फालतू रखें।
6. हर फार्म पर थर्मामीटर जो तापमान बताता है और दूसरा जो आद्रता बताता है एक जरूर होना चाहिये। इससे आपको मैनेजमेंन्ट में सहायता मिलेगी।

मार्शल ब्रांड के प्री स्टार्टर का पोल्ट्री फार्मिंग में महत्त्व

आज के इस प्रतिस्पर्धा के दौर में ब्रायलर के तेज विकास के लिए तीन प्रकार के आहार विकसित किये गये हैं।

1. प्री-स्टार्टर एक दिन से 10 दिन तक 2. स्टार्टर 11से 25 दिन तक 3. फिनिशर 26वें दिन से लेकर बिक्री तक

ब्रोयलर की विशिष्ट प्रजाति के लिए प्रारम्भिक दस दिनों में विशेष पोषण वाला आहार जिसमें अधिक प्रोटीन, अधिक ऊर्जा, विशिष्ट अमिनो एसिड व एन्जाइम्स की आवश्यकता होती है। प्रारम्भिक दस दिनों में ही चूजों में शीघ्रता से हड्डियों, मान्सपेशियों व प्रतिरक्षक प्रणाली का विकास होता है। मार्शल प्री स्टार्टर का उद्देश्य ब्रोयलर के लिए प्रारम्भिक 10 दिनों में पोषण देना है। मार्शल प्री स्टार्टर महत्वपूर्ण शरीरिक अंग जैसे (हृदय, लीवर, गुर्दे, फेफड़ों एवं हड्डियों के ढाँचे) के लिए समुचित पोषण देता है। जिससे चूजों के वजन में शीघ्र वृद्धि होती है व जिससे बेहतर F.C.R. मिलता है, लागत व समय की भी बचत होती है। मार्शल प्री स्टार्टर चूजों की कम से कम मृत्य को भी सुनिश्चित करता है। यह एक अतिरिक्त लाभ है। 10 दिनों में दाने की कुल खपत चूजों के वजन के बराबर होती है।

दयाल पोल्ट्री फीड सेल्स टीम का तकनीकी प्रशिक्षण

दिनांक 15 जुलाई 2016 को दयाल पोल्ट्री फीड की सेल्स टीम का तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम चरन रेस्टोरेंट एवं क्लब, लखनऊ में किया गया। इसमें बरेली के प्रख्यात वैज्ञानिक के द्वारा सेल्स टीम को पोल्ट्री फार्मिंग, रोगों की पहचान एवं उनकी रोकथाम के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में आदरणीय निदेशक महोदय श्री अनुभव गुप्ता जी, श्री सुल्तान मोहम्मद खान जी, प्रबन्धक विपणन (पोल्ट्री) एवं सभी टीम लीडरों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

फलों का राजा –"आम"

भूमि उपचार हेतु : दयाल कार्बनिक + जैविक मिश्रण

अनमोल खाद–नीम प्लस	160 किग्रा0
वसुधा बायो – बूस्टर (N)	2 किग्रा0
वसुधा बायो – फॉस (P)	2 किग्रा0
अनमोल डर्मा (जैव फफूँदीनाशक)	1 किग्रा0
अनमोल सूडो (जैव फफूँदीनाशक)	1 किग्रा0
दयाल बायोटर	10 किग्रा0

उपरोक्त उत्पादों को भली प्रकार मिश्रित करके छायादार स्थान पर 24 से 48 घण्टे रखने के पश्चात् वृक्ष की आयु के अनुसार निम्न मात्रा से नाली–पद्धति में प्रयोग करें।

अवस्था (वृक्ष की आयु)	दयाल कार्बनिक + जैविक मिश्रण (किग्रा0/वृक्ष)
5 वर्ष तक के पौधे	2 किग्रा0
5–8 वर्ष	3 किग्रा0
8 वर्ष से अधिक	4 किग्रा0

अच्छी तरह से सड़ी गोबर की खाद प्रति वृक्ष 8–10 किग्रा0 प्रयोग कर सकते है।

पोषक तत्वों की मात्रा प्रति पेड़

अवस्था (वृक्ष की आयु)	डी.ए.पी	सुपर एक्शन पोटाश	अनमोल माइक्रो (आम स्पेशल)	दयाल मोनो जिंक	दयाल कैल्शिबोर	दयाल धरती गोल्ड
1 से 5 वर्ष तक	400–500 ग्राम	250 ग्राम	100 ग्राम	100 ग्राम	75 ग्राम	75 ग्राम
5 से 8 वर्ष तक	500–600 ग्राम	250 ग्राम	250 ग्राम	100 ग्राम	75–100 ग्राम	150 ग्राम
8 से 15 वर्ष तक	1 किलो	400–500 ग्राम	500 ग्राम	100 ग्राम	100 ग्राम	200 ग्राम
15 वर्ष से अधिक	1.5 किलो	500–600 ग्राम	750 ग्राम	150 ग्राम	250 ग्राम	250 ग्राम

खाद देने का समय: फल टूटने के बाद सितम्बर से अक्टूबर माह में।

प्रयोग विधि :

(1) 5 वर्ष तक के पौधे के तने के चारों तरफ (1 मीटर के अन्दर) उपरोक्त बताई गई मात्रा का बुरकाव करके गुडाई कर दें।

(2) 5 वर्ष से अधिक आयु के वृक्षों के तने से 1.5 मीटर की दूरी पर चारों तरफ 6 इंच चौड़ी व 8 इंच गहरी नाली (रिंग) खोदकर उपरोक्त मात्रा को नाली में भर दें तथा मिट्टी से ढ़क कर सिचाई करें।

FROOTOOZ™

नया उत्पाद

भरपूर, गुणवत्तायुक्त व शीघ्र समय से उत्पादन आज हमारे किसानों व देश दोनों की माँग है। इस माँग को पूरा करने में हार्मोन आधारित उत्पादों का महत्वपूर्ण योगदान है। FROOTOOZ™ जिबरेलिक एसिड हार्मोन आधारित उत्पाद है। FROOTOOZ™ अवशोषित होकर पौध तन्त्र में प्रवेश कर उपापचयी क्रियाओं को बढाकर शीघ्रता से परिणाम प्रदर्शित करता है।

विशेषताएँ –

(1) पौधे की जडों का विकास कर पौध वृद्धि के लिये आवश्यक तत्वों के अवशोषण में सक्षम। (2) पौध कोशिका (Plant Cells) के आकार को बढ़ाकर तने व पत्तियों के आकार को बढ़ाने में सहायक। (3) प्रकाश संश्लेषण व उपपाचयी क्रियाओं में वृद्धि (4) अपरिपक्व पुष्प गिरने की प्रक्रिया में कमी। फलों का एक समान पकाव, आकर्षक रंग व आकार। (5) पौध कटिंग व पौध रोपण के समय प्रयोग से शीघ्र पौध स्थायित्व। (6) गाँठो के बीच की दूरी (Internodal distance) बढ़ाने में सहायक। (7) बीज निद्रा (Seed dormancy) को तोड़कर शीघ्र अंकुरण। अत: बीज उपचार कि लिये उत्तम। (8) मनुष्य, पशु, पक्षी इत्यादि के लिये सुरक्षित।

फसलें – सभी फलवर्गीय, पुष्पवर्गीय, सब्जीवर्गीय, दलहनी, तिलहनी फसलों में प्रयोग हेतु उत्तम।

प्रयोग – 2 मिली0 प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

दयाल उत्पादों की कहानी- किसानों की जुबानी

मैं कपास, मूँगफली तथा प्याज की खेती करता हूँ, दयाल के प्रतिनिधि के द्वारा बताये जाने पर मैंने पहले कपास कॉम्बीडोज का प्रयोग कपास की फसल में किया जिससे कपास की फसल हरी रही और फूलों की संख्या में भी अधिक वृद्धि हुई अत: अब मैं दयाल का कॉम्बीडोज मूँगफली तथा प्याज की फसल में भी प्रयोग करने लगा हूँ जिससे फसल से हमें अधिक उपज प्राप्त हो रही है।

मोहन लाल पालीवाल, ग्राम – बरसानाडा, जिला – जोधपुर (राजस्थान), मो. 08094700698

मैं 10 एकड़ में धान की फसल लगाता हूँ तथा पिछले कई वर्षो से दयाल के उत्पादों का प्रयोग करता आ रहा हूँ। पिछले वर्ष धान में मैंने ह्यूमिक फर्ट, सुपर एक्शन पोटाश तथा मोनो ज़िंक का प्रयोग किया जिससे पौधों में कल्लों की संख्या अधिक आयी और साथ ही पौधों में हरापन भी बना रहा तथा उपज 10-15 % तक अधिक रही। **राजेश चौरसिया**, ग्राम – छटनी, जिला – जबलपुर (मध्य प्रदेश), मो. 09893565798

सम्पादक : दयाल ग्रुप, परतापुर, मेरठ, मो0 9792201571 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित